संस्कृत शिक्षण विधियाँ

मूल्याङ्कन

- परिभाषा
- विशेषताएं
- महत्व
- उद्देश्य
- मूल्यांकन के प्रकार
- मापन एवं मूल्यांकन में अंतर

- Sk Katariya

Sky Educare

www.skyeducare.com

SKY EDUCARE

अधिक उन्नत PDF एवं समर्पित कोर्स के लिए –

SKY EDUCARE ऐप डाउनलोड करें / Download Mobile App

⇩
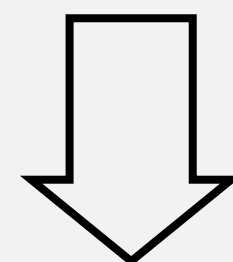
Download

मूल्यांकन की परिभाषा :-

- ***मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ :*** *'मूल्य का अंकन करना या मूल्य का निर्धारण करना'* ।

- *जैरोली मेक के अनुसार मूल्यांकन की परिभाषा - "मूल्यांकन वह पद्धति है जिसके द्वारा हम पूर्व निर्धारित उद्देश्यों, ध्येयों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा को निर्धारित करते हैं , यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षण में मूल्यों तथा उद्देश्यों के मध्य तुलना की जाती है। "*

- *मूल्य निर्धारण में छात्र को बताया जाता है कि उसके अंको के आधार पर सभी छात्रों के मध्य उसका रैंक (Rank) कहां पर है।* ***अतः मूल्यांकन के अंतर्गत छात्र व्यवहार का परिमाणात्मक तथा गुणात्मक व्यवहार का अध्ययन एवं उसके मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया मूल्यांकन कहलाती है।***

- ***संक्षेप में हम कह सकते हैं की 'शिक्षा में उद्देश्यों की कितनी पूर्ति हुई है यह जानना ही मूल्यांकन है'।***

मूल्यांकन की परिभाषा :-

- ***संस्कृत भाषा शिक्षण के संदर्भ में*** *मूल्यांकन से तात्पर्य भाषा अध्यापक की शिक्षण संबंधी क्रियाओं और इन क्रियाओं के परिणाम स्वरूप छात्रों की उपलब्धियों का मापन करने और उसके आधार पर उनकी सापेक्षिक स्थिति स्पष्ट करने की प्रक्रिया से होता है।*

प्रभावी मूल्यांकन की विशेषताएं :-

- **वैधता (Validity):** जिस उद्देश्य का मूल्यांकन करना हो उस उद्देश्य का मूल्यांकन हो जाता है तो उन साधनों, उपकरणों को वैध का जाता है।
- **विश्वसनीयता (Reliability):** विश्वसनीयता का अर्थ है विश्वास के पात्र अर्थात जब अंको का बदलाव न हो दोबारा से चेक करने पर भी अंक समान रहे वस्तुनिष्ट प्रश्न विश्वसनीय होते हैं। निबंधात्मक प्रश्न विश्वसनीय नहीं होते।
- **वस्तुनिष्ठता Objectivity):** मूल्यांकन पक्षपात रहित होता है। उत्तर के लिखित आधार पर ही मूल्यांकन होता है ना की परीक्षा की दृष्टि के आधार पर होता है। वस्तुनिष्ठता में प्रश्न का अर्थ स्पष्ट होता है उसमें कोई भी भ्रांति नहीं होती है।

प्रभावी मूल्यांकन की विशेषताएं :-

- **व्यापकता (Comprehensiveness):** मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है अर्थात गहराई में मूल्यांकन करते समय किसी भी विषय की गहराई से प्रश्न पूछना आवश्यक है।

- **उपयोगिता (Usefulness):** अच्छा मूल्यांकन हमेशा जीवन के लिए उपयोगी होता है। यह व्यवहारिक होता है तो प्रशिक्षण एवं जीवन में उपयोग किया जा सकता है।

- **विभेदीकरण (Differentiation):** मूल्यांकन में बच्चो में विभेद कर सकने की क्षमता होनी चाहिए जिससे की मूल्यांकन की निष्पक्षता बनी रहे।

मूल्यांकन का महत्व :-

- छात्रों को ***अध्ययन की ओर अग्रसित*** करता है।
- छात्रों के ***व्यक्तिगत मार्गदर्शन*** में सहायता करता है।
- शिक्षण के ***उद्देश्यों की प्राप्ति*** में सहायक है।
- बच्चों की ***कमजोरियों को जानने*** में सहायक होता है।
- शैक्षिक व ***व्यवसायिक मार्गदर्शन*** में सहायक है।

मूल्यांकन के उद्देश्य:-

- बच्चों में अपेक्षित **व्यवहार एवं आचरण परिवर्तन की जांच करना।**
- यह जांचना कि बच्चों ने कुशलताओं, योग्यता, आदि को कितना ग्रहण किया है।
- बालकों की सभी कठिनाइयों का निर्धारण करने तथा दोषो को जानना।
- उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करना।
- बालकों के चहुमुखी विकास को निरंतर गति प्रदान करना।
- इससे अध्ययन और अध्यापन दोनों का मापन कर सकते हैं।
- मूल्यांकन द्वारा प्रयोजन, शिक्षण विधियों की उपयोगिता एवं विद्यालय की समस्त क्रियाओं का अंकन करना।

मापन एवं मूल्यांकन में अंतर :-

• मापन	• मूल्यांकन
• मापन का कार्य केवल **अंक प्रदान करना** ही है।	• मूल्यांकन में **अंक प्रदान करने के पश्चात मूल्यों का निर्धारण** भी किया जाता है।
• मापन का अर्थ **वस्तु की मात्रा** से है।	• मूल्यांकन का अर्थ उस **वस्तु के मूल्य** से है।
• किसी एक गुण या चर का मापन	• मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है
• मापन में निश्चित धारणा नहीं बनाई जा सकते हैं।	• मूल्यांकन में कई परीक्षणों के आधार पर बालक के विषय में धारणा बनाए जा सकते हैं।
• समय, धन, श्रम कम लगता है	• मूल्यांकन में समय श्रम तथा धन अधिक लगता है
• मापन में सार्थक भविष्यवाणी संभव नहीं है	• मूल्यांकन में सार्थक भविष्यवाणी संभव है
• मापन का ज्ञान अपूर्ण है	• मूल्यांकन का ज्ञान पूर्ण है
• मापन मूल्यांकन से पहले होता है	• मूल्यांकन मापन के बाद होता है
• मापन के लिए उद्देश्य जानना आवश्यक नहीं।	• मूल्यांकन उद्देश्य आधारित होता है।

मूल्यांकन के प्रकार :-

१. पाठांतर्गत मूल्यांकन

शिक्षण के साथ-साथ

1. उच्चारण
2. वाक्य प्रयोग
3. बोध प्रश्न

२. पाठोपरांत मूल्यांकन

शिक्षण के बाद पश्चात्

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
2. लघुतरात्मक प्रश्न
3. निबंधात्मक प्रश्न